लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय, मोतीहारी,
पूर्वी चम्पारण, बिहार

सूफी काव्यधारा के प्रतिनिध कवि - मलिक मुहम्मद जायसी

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

1. मलिक मोहम्मद जायसी →

जन्म - 1492 ई.

मृत्यु - 1542 ई.

जन्मस्थान - जायस (उ. प्र.)

गुरु का नाम - (i) डॉ. नगेन्द्र के अनुसार - शेख मोहीदी या शेख मोइनुद्दीन माना गया है

(ii) आधुनिक शोधों के अनुसार - शेख बुरहान एवं शैयद असरफ

प्रमुख रचनाएँ -

1. पद्मावत 2. अखरावट 3.
3. आखिरी कलाम 4. चित्ररेखा
5. कहरानामा 6. मसलानामा

रचनाओं के सम्बन्ध में विशेष तथ्य →

(1) पद्मावत → (रचनाकाल - 1540 ई. / 947 हिजरी) [ई. से 593 घटा दें

→ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार यह हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम बड़ा महाकाव्य माना गया है

→ इस महाकाव्य रचना को 57 खण्डों में विभाजित किया गया है
→ इस महाकाव्य में चितौड़ के राजा रत्नसेन एवं सिंहलदीप की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम एवं विवाह की कथा का वर्णन किया गया है।

→ विषयवस्तु या कथानक के आधार पर इस रचना को निम्नानुसार दो भागों में बांटा गया है यथा—
(i) पूर्वार्द्ध भाग – रत्नसेन व पद्मावती के विवाह तक की कथा का वर्णन।
(ii) उत्तरार्द्ध भाग – विवाह के बाद के जीवन का वर्णन

→ इस रचना का पूर्वार्द्ध भाग तो कवि की कल्पना के आधार पर रचित माना जाता है एवं उत्तरार्द्ध भाग ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर माना जाता है।

→ डॉ. हरदेव बाहरी द्वारा रचित 'प्राकृत साहित्य का इतिहास' रचना के अनुसार इस महाकाव्य रचना का मूल स्त्रोत (उपजीव्य ग्रंथ) प्राकृत भाषा में रचित 'रत्न शेखर कथा' रचना को माना गया है।

→ इस रचना के विविध पात्र विभिन्न प्रकार के दार्शनिक तत्वों के प्रतीक माने गये हैं। स्वयं जायसी ने यह प्रतीक योजना निम्नानुसार प्रस्तुत की है

क्र. सं.	पात्र या स्थान का नाम	प्रतीक योजना
1.	चित्तौड़	→ तन (शरीर)
२.	सिंहल द्वीप	→ हृदय
3.	राजा रत्नसेन (नायक)	→ मन
५.	पद्मावती (नायिका)	→ सात्विक बुद्धि
६.	नागमती (सहनायिका)	→ सांसारिक बुद्धि
८.	हिरामन तोता	→ गुरु
८.	राघव-चेतन	→ शैतान
९.	अलाउद्दीन खिलजी (प्रतिनायक)	→ माया

→ इस प्रतीक योजना के कारण इस रचना को 'रूपक काव्य' के नाम से भी पुकारा जाता है।

→ इस रचना की विशालता के कारण आचार्य शुक्ल ने इस रचना को 'भक्तिकाल का वेदवाक्य' भी कहकर पुकारा है

→ इस रचना के आरम्भ में मसनवी शैली का प्रयोग करते हुये जायसी ने ईश्वर के लिए 'करतार' शब्द का प्रयोग किया है तथा शाहेवक्त के रूप में शेरशाह की प्रसंशा की गई है।

→ यह रचना सूफी साहित्य परम्परा की सर्वश्रेष्ठ या प्रौढ़तम रचना भी मानी जाती है।

→ इस रचना की अधिकतर पांडुलिपियां फारसी लिपी में प्राप्त होती है।

→ बारहमासा वियोग वर्णन परम्परा का पालन करते हुए इस रचना में सहनायिका नागमती के बारहमासा वियोग का सुन्दर वर्णन भी किया है।

२. अखरावट → इस रचना में वर्णमाला में प्रत्येक अक्षर को लेकर सूफी मत के सिद्धान्तो का वर्णन किया गया है।
→ पद्मावत की तरह यह रचना भी चौपाई छंद में लिखी गई है।

३. आखिरी कलाम – इस रचना में रोजे कयामत (प्रलय) के दिन उत्पन्न होने वाली स्थिति का वर्णन किया गया है।
→ यह रचना कुरान में उल्लेखित 'हश्र कथा' पर आधारित रचना मानी जाती है।

५. चित्ररेखा → यह जायसी द्वारा रचित लघु प्रेमाख्यानक श्रेणी की रचना मानी जाती है इस रचना में कनौज के राजकुमार प्रीतम कँवर एवं चन्द्रपुर की राजकुमारी चित्ररेखा की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।

२. कहरानामा → इस रचना में आत्मा एवं परमात्मा में परिणय (आध्यात्मिक मिलन) का वर्णन किया गया है।
→ इस रचना के पद 'कहार' जाति के लोकगीतों में प्रचलित कहरवा राग में लिखे गये हैं जिसके आधार पर ही इसका नाम कहरानामा रखा गया है।

६. मसलानामा → इस रचना में कवि जायसी ने ईश्वर के प्रति अपना आत्म निवेदन प्रस्तुत किया है।